एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण सूचना

परम आदरणीय भदंत लैडी सयाडोजी का यह सुदृढ़ विश्वास था कि द्वितीय बुद्धशासन के प्रारंभ होने पर बुद्ध की शिक्षा बर्मा से भारत लौटेगी और चिरकाल तक लोककल्याण करती रहेगी। परम पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन का भी यही मत था कि बुद्ध की शिक्षा द्वितीय बुद्धशासन तक यानी आगे पच्चीस सौ वर्षों तक शुद्ध रूप में सारे विश्व में जीवित रहेगी। इसी उद्देश्य से उन्होंने गुरुदेव गोयन्काजी को भारत भेजा। श्री गोयन्काजी का भी यही दृढ़ विश्वास है कि बुद्ध की शिक्षा द्वितीय बुद्धशासन तक अपने शुद्ध रूप में सारे विश्व में जीवित रहेगी। इस निमित्त उन्होंने काम करना आरंभ किया।

परियत्ति -- यानी भगवान बुद्ध की वाणी एवं तत्संबंधी पालि साहित्य। श्री गोयन्काजी ने भारत आकर छट्ठ संगायन में स्वीकृत हुई तिपिटक और तत्संबंधित सारे पालि साहित्य को देवनागरी लिपि में पुस्तकाकार प्रकाशित कराया। फिर विश्व की अनेक लिपियों में लिप्यन्तरित करके इसकी सी. डी. बनवायी और अब इसे इंटरनेट पर निवेशित करा दिया। अतः अब सदियों तक इसके शुद्ध रूप में कायम रहने में कोई संदेह नहीं।

पटिपत्ति -- यानी विपश्यना का काम उन्होंने भारत आते ही शुरू कर दिया। पिछले इकतालीस वर्षों में यहीं नहीं, बल्कि विश्व के दूर-दूर देशों में विपश्यना अपने शुद्ध रूप में फैल गयी और फैलती ही जा रही है। इसे विभिन्न संप्रदाय के लोगों ने स्वीकार किया है क्योंकि यह सांप्रदायिकताविहीन है, अंधविश्वासों और अंधमान्यताओं से सर्वथा मुक्त है, वैज्ञानिक है और आशुफलदायिनी है।

इसे शुद्ध रूप में प्रसारित करने के लिए उन्होंने लगभग १,२०० सहायक आचार्य प्रशिक्षित किये हैं। भविष्य में और भी होते रहेंगे। अब तक विश्व के भिन्न-भिन्न देशों में १६२ स्थायी निवासीय विपश्यना केंद्र स्थापित हो चुके हैं। भविष्य में और अधिक होते ही जायेंगे। इससे पटिपत्ति का प्रचार-प्रसार आगामी दो-ढाई हजार वर्षों तक निश्चित रूप से हो सकेगा।

भगवान की शिक्षा को नितांत शुद्ध रखने के लिए विपश्यना के आचार्यों, विपश्यना-केंद्रों और पगोडा के ट्रस्टियों के लिए निम्नलिखित नियम बनाये गये हैं जो कि अब भी और भविष्य में भी लागू रहेंगे --

(१) भगवान बुद्ध के समय से चली आ रही कल्याणी विपश्यना विधि की शुद्धता कायम रखें। इसमें किसी प्रकार का भी कोई सम्मिश्रण न हो।

(२) अन्य किसी प्रकार की साधना की निंदा न करें; परंतु उससे पूर्णतया विरत रहें।

(३) वे किसी भी राजनैतिक पार्टी के प्रति सहानुभूति भले रखें पर राजनीति में सक्रिय भाग कदापि न लें।

(४) सभी आचार्यों तथा ट्रस्टियों की अपनी-अपनी स्वतंत्र आजीविका हो ताकि वे किसी केंद्र पर अथवा पगोडा पर आश्रित न हों। जो दान मिले उसमें से अपने लिए एक पैसा भी न लें। सारा संबंधित ट्रस्ट के हवाले कर दें।

(५) विपश्यना केंद्रों में सम्मिलित होने वाले तथा पगोडा में प्रवेश करने वाले लोगों में रंचमात्र भी भेदभाव न किया जाय। मनुष्य मनुष्य हैं। विपश्यना उनमें कोई भेदभाव करना नहीं सिखाती।

(६) पगोडा में आने वालों से कोई प्रवेश-शुल्क नहीं लिया जाय। केंद्रों में सम्मिलित होने वालों से प्रशिक्षण का तो दूर, निवास, भोजन इत्यादि का भी कोई शुल्क न आज लिया जाय और न ही कभी भविष्य में। कोई साधक स्वेच्छापूर्वक प्रसन्नचित्त से दान दे तो वह अवश्य स्वीकार करें।

विश्व विपश्यना पगोडा -- तीसरा महत्त्वपूर्ण कार्य जो गुरुदेव श्री गोयन्काजी ने भारत तथा विश्वव्यापी साधकों की सहायता से कराया -- वह है इस महान पगोडा का निर्माण।

इसका एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है कृतज्ञता-ज्ञापन। एक तो सयाजी ऊ बा खिन के प्रति, जिन्होंने यह कल्याणकारी विद्या म्यंमा (बर्मा) से भारत भेजी और दूसरी ब्रह्मदेश के प्रति, जिसने २,००० वर्षों तक सम्राट अशोक से प्राप्त इस विद्या को और बुद्धवाणी को शुद्ध रूप में संभाल कर रखा। इसलिए म्यंमा के महत्त्वपूर्ण उपकार को कभी न भूलें। पगोडा ही नहीं, बल्कि इसके सारे परिसर में बर्मी संस्कृति, वास्तुकला, चित्रकला का ज्ञापन किया गया है। इनमें भी अभी या भविष्य में, कुछ भी जोड़-तोड़ करके किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं किया जायगा।

इस पगोडा का एक अन्य उद्देश्य है विपश्यना का शुद्ध प्रचार-प्रसार। श्री गोयन्काजी इसके प्रचार के लिए कीमत चुकाकर किसी प्रेस अथवा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का सहयोग नहीं लेते और न ही भविष्य में कभी लिया जायगा। कोई मीडिया स्वेच्छा से विपश्यना के बारे में सही सूचना दे तो भले दे। जब उपरोक्त प्रकार से सही प्रचार-प्रसार न होता हो तब यह पगोडा ही विपश्यना के प्रसार का सही माध्यम बनेगा। इस पगोडा पर आने वालों को विपश्यना-संबंधी सूचना मिलेगी। उनमें से कुछ प्रभावित होकर किसी विपश्यना शिविर में अवश्य सम्मिलित होंगे और उसका लाभ लेंगे। बाकियों को विपश्यना का संदेश तो मिलेगा ही।

आर्थिक सहायता -- जो भी विपश्यना केंद्र अब हैं या भविष्य में बनेंगे, उनमें साधक दस दिन अथवा उससे अधिक दिनों तक साधना करके लाभान्वित होते हैं, होते रहेंगे। ऐसे श्रद्धालु साधक/साधिकाओं में से अनेक अब भी दान देते हैं और भविष्य में भी देते रहेंगे। ऐसे दान से आज के और भविष्य के सभी केंद्रों का संचालन सुविधापूर्वक होता रहेगा।

परंतु पगोडा में अब भी कोई प्रवेश-शुल्क नहीं लिया जाता और न ही भविष्य में कभी लिया जायगा। यहां सक्रिय रूप से कोई साधना-विधि भी नहीं सिखायी जाती, जिससे लाभान्वित होकर कोई श्रद्धापूर्वक दान दे। ऐसी परिस्थिति में आज भी और भविष्य में भी, पगोडा की देखभाल के लिए आर्थिक संकट उत्पन्न होने की आशंका है और इसकी पवित्रता नष्ट होने की भी।

पगोडा की अत्यंत सुंदर और आकर्षक बनावट के अतिरिक्त इसमें जो दस हजार लोगों के एक साथ बैठने के लिए बिना खंभों वाला विशाल ध्यानकक्ष बना हुआ है, वह लोगों को आकर्षित करेगा ही। वे इसका प्रयोग अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, सांप्रदायिक, राजनैतिक आदि भिन्न-भिन्न आयोजनों के लिए प्रयोग करना चाहेंगे। इस निमित्त वे बहुत ऊंचा किराया देने का भी प्रलोभन देंगे। इस दूषित प्रलोभन से आज के तथा भविष्य के ट्रस्टियों को भी बचकर रहना आवश्यक होगा, ताकि न केवल अब बल्कि भविष्य में भी धन के अभाव में पगोडा की पवित्रता नष्ट न

हो जाय। ऐसी स्थिति में पगोडा के रख-रखाव, मरम्मत, बिजली, पानी इत्यादि तथा अन्य प्रार्बधिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रति माह लाखों की राशि का आवश्यक धन कहां से आयगा? इसे ध्यान में रखते हुए ही यह निर्णय किया गया कि एक 'स्थायी धनराशि' (corpus fund) का गठन किया जाय, जिसके ब्याज से अब तथा भविष्य में भी इन आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहे।

जैसे इस विशाल, भव्य विश्व विपश्यना पगोडा के निर्माण के लिए भारत के ही नहीं, बल्कि विश्व भर के हजारों साधकों का सहयोग प्राप्त हुआ वैसे ही इस महत्त्वपूर्ण 'स्थायी धनराशि' (corpus fund) के गठन में भी सब का सहयोग होगा ही।

अपने यहां बड़ी संख्या में विपश्यना शिक्षक, पगोडा तथा विपश्यना केंद्रों के ट्रस्टी हैं और उनसे कहीं अधिक भारत तथा विश्व भर में फैले विपश्यी साधक तथा साधिकाएं हैं। इनमें से किसी को भी पूज्य गुरुजी द्वारा पगोडा के लिए प्रस्तावित 'स्थायी धनराशि' के गठन का सुझाव उचित लगे तो वह श्रद्धा और कृतज्ञता के भाव से अपनी शक्ति-सामर्थ्य के अनुसार इस योजना को आगे बढ़ाने में सहयोग दे सकता है। कोई व्यक्ति अपनी सहयोग राशि सीधे मुंबई न भेज सके तो वह स्थानीय विपश्यना केंद्र में यह लिखकर भेज दे कि यह दान 'विश्व विपश्यना पगोडा' की 'स्थायी धनराशि' के लिए है।

उदारचित्त दानियों के सहयोग से इस आवश्यक 'स्थायी धनराशि' के गठन की पूर्ति अवश्य होगी। इनमें से कोई चाहें तो माहवार अपनी सुविधानुसार कम या अधिक राशि लंबे समय तक किश्तों में भी दे सकते हैं। इस महान धर्मयज्ञ में प्रत्येक व्यक्ति की ओर से जो धर्माहुति दी जायगी, वह दीर्घकाल तक अनेकों के लिए कल्याणकारिणी सिद्ध होगी।

अपनी परंपरा के अनुसार जैसे शिविरों में केवल आवश्यकता सूचित की जाती है और इस पर जो दान दे या न दे, उसका नाम कभी प्रकाशित नहीं होता। यहां भी इस परंपरा के नियम का दृढ़तापूर्वक पालन किया जायगा।

एक और बात सभी दानियों को समझ लेनी चाहिए कि इस राशि का एक पैसा भी पगोडा के रख-रखाव और प्रार्बधिक व्यवस्थाओं के अतिरिक्त अन्य किसी भी काम में बिल्कुल नहीं लगेगा। गुरुदेव इसका प्रपुष्ट प्रामाणिक न्यायिक प्रबंध करवा रहे हैं।

महाबोधि सोसायटी के पूर्व अध्यक्ष भदंत विपुलसारजी महाथेर तथा श्रीलंका की पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती सिरिमाओ आर. डी. भण्डारनायके एवं बर्मा के परिनिर्वाण प्राप्त अरहंत आदरणीय भिक्षुप्रवर वैबू सयाडोजी ने भगवान बुद्ध की जो पावन धातुएं हमें दी हैं वे सभी सम्मानपूर्वक इस महत्त्वपूर्ण पगोडा में संनिधानित की जा चुकी हैं। गुरुदेव को यह पूर्ण विश्वास है कि इन धातुओं से पवित्र हुआ यह भव्य पगोडा इन पावन धातुओं को आगामी २,५०० वर्षों तक अक्षुण्ण रखने के लिए कायम रहेगा और धर्म के जाज्वल्यमान प्रतीक स्वरूप भगवान बुद्ध की पावन शिक्षा का संदेश देता रहेगा तथा अनेकों को इससे लाभान्वित होने की प्रेरणा देता रहेगा।

स्थायी धनराशि के संग्रह का यही उद्देश्य है।

सबके प्रति गुरुदेव की असीम मंगल-मैत्री।